परलोक की यात्रा (8 का भाग 5): कब्र में नास्तिक

रेटिंग:

विवरण:

श्रेणी: लेख परलोक मौत के बाद का सफर

द्वारा: Imam Mufti (co-author Abdurrahman Mahdi)

पर प्रकाशित: 04 Nov 2021

अंतिम बार संशोधित: 04 Nov 2021

जैसे ही किसी दुष्ट नास्तिक की मृत्यु निकट आती है, उसे नरकाग्नि की गर्मी का कुछ अनुभव कराया जाता है। उसके साथ क्या होने वाला है इसका अनुभव उसे पृथ्वी पर दूसरा मौका दिए जाने की याचना करने के लिये विविश कर देता है ताकि वह कुछ अच्छा काम कर सके जो उसे जीते जी करना चाहिए था। पर अफ़सोस! उसकी याचना व्यर्थ जाएगी।

“जब, ऐसे किसी व्यक्ति की मृत्यु आती है, तो वह कहता है: ‘हे मेरे ईश्वर। मुझे जीवन वापस दे दें (पृथ्वी पर) ताकि मैं कुछ अच्छे काम कर सकूँ जिनकी मैंने उपेक्षा की।’ पर अब यह किसी तरह नहीं हो सकता! अब यह केवल एक कोरी इच्छा है जो यह व्यक्त कर रहा है। और ऐसे लोगों के सामने एक रुकावट है, (जो उन्हें वापस आने से रोकती है: कब्र के जीवन से) पुनर्जीवन के दिविस तक जब वे पुनर्जीवित होंगे।” (क़ुरआन 23:99-100).

दिव्य कोप का दंड दूर बैठे भयंकर रूप से कुरूप और काले देवदूतों द्वारा, उस दुष्ट आत्मा को सुना दिया जाता है:

"अब उबलते हुए पानी, मवाद, और दूसरी बहुत सी, ऐसी यातनाओं का आनंद लो।" (इब्न मजाह, इब्न कथीर)

आस्था न रखने वाली आत्मा अपने मालिक ईश्वर से मिलने को उत्सुक नहीं रहेगी, जैसा कि पैगंबर ने समझाया है:

"जब एक नास्तिक की मृत्यु निकट आती है, तो उसे ईश्वर की यातना और उसके प्रतिदिन का बुरा समाचार मिलता है, तब उसे अपनी हालत से अधिक घृणास्पद और कुछ नहीं लगता। इसीलिए, वह ईश्वर से मिलने को उत्सुक नहीं होता, और ईश्वर भी उससे मिलने को उत्सुक नहीं होता।" (सहीह अल-बुखारी)

पैगंबर ने यह भी कहा:

"जिसे भी ईश्वर से मिलने में खुशी होती है, ईश्वर को भी उससे मिलने में खुशी होती है, और जो भी ईश्वर से मिलने से नफरत करता है, ईश्वर भी उससे नहीं मिलना चाहता।" (सहीह अल-बुखारी)

मृत्यु का देवदूत कब्र में नास्तिक के सर पर बैठता है और कहता है: "**दुष्ट आत्मा, अल्लाह के कोप के लिये बाहर आ"** और आत्मा को शरीर से बाहर खींच लेता है।

"आप यदि ऐसे अत्याचारी को मरण की घोर दशा में देखते, जबकि स्वर्गदूत उनकी ओर हाथ बढ़ाये (कहते हैं:) अपने प्राण निकालो! आज तुम्हें इस कारण अपमानकारी यातना दी जायेगी कि तुम ईश्वर पर झूठ बोलते और उसकी छंदो को मानने से अभिमान करते थे।" (क़ुरआन 6:93)

"यदि आप उस दशा को देखते, जब स्वर्गदूत अविश्वासिओं के प्राण निकाल रहे थे, तो उनके मुखों और उनकी पीठों पर मार रहे थे तथा (कह रहे थे कि) दहन की यातना चखो।" (क़ुरआन 8:50)

दुष्ट आत्मा बड़ी मुश्किल से शरीर छोड़ती है, मानो देवदूत उसे एक काँटेदार पेंचकस से किसी गीली ऊन में से निकाल रहे हों [1] मृत्यु का देवदूत तब आत्मा को पकड़ लेता है और बालों से बने एक बोरी में रख देता है जिससे सड़ी हुई बदबू आती है, ऐसी बदबू जो पृथ्वी पर किसी सड़ती हुई लाश में पाई जाती है। देवदूत तब उसे देवदूतों की दूसरी टोली के पास ले जाते हैं, जो पूछती है: "यह दुष्ट आत्मा किसकी है" जिसका उत्तर देते हुए वह कहते हैं: "फलां फलां, फलां फलां का बेटा"- इतने खराब नामों का प्रयोग करते हैं जो उसके लिये पृथ्वी पर भी न कहे गए होंगे। उसके बाद, जब वह निचिले स्वर्ग में लाया जाता है, तो विनिती की जाती है कि उसके लिये द्वार खोला जाए, लेकिन विनिती ठुकरा दी जाती है। पैगंबर इन घटनाओं का वर्णन करते हुए जब इस स्थान पर पहुँचे , तो वह बोले:

"स्वर्ग के द्वार इनके लिये नहीं खोले जाएंगे और वे स्वर्ग में प्रवेश नहीं पा सकेंगे जब तक कि कोई ऊंट सुइं की नोक से न निकल जाए।" (क़ुरआन 7:40)

ईश्वर कहेगा: **"उसकी पुस्तक को सबसे निचिली धरती की सिज्जीन में रख दिया जाए।"**

...और उसकी आत्मा को नीचे उतार दिया जाता है। इस समय, पैगंबर (ईश्वर की दया और कृपा उन पर बनी रहे) ने कहा:

"जो अल्लाह के और भी साथी होने की बात करता है उसकी हालत ऐसे हो जाती है जैसे वह स्वर्ग से गिरा हो और बीच में पक्षियों द्वारा लपक लिया गया हो या हवा द्वारा किसी दूर स्थान पर फेंक दिया गया हो।" (क़ुरआन 22:31)

दुष्ट आत्मा को तब वापस शरीर में डाल दिया जाता है और दो खूंखार, डरावने देवदूत, मुनकर और नकीर, उससे पूछताछ करने आते हैं। उसे बैठाकर, पूछते हैं:

मुनकर और नकीर: **"तुम्हारा ईश्वर कौन है?"**

नास्तिक आत्मा: **"अफ़सोस, अफ़सोस, मैं नहीं जानता।"**

मुनकर और नकीर: **"तुम्हारा धर्म क्या है?"**

नास्तिक आत्मा: **"अफ़सोस, अफ़सोस, मुझे नहीं पता।"**

मुनकर और नकीर: **"तुम इस आदमी (मुहम्मद) के बारे में क्या जानते हो?"**

नास्तिक आत्मा: **"अफ़सोस, अफ़सोस, मुझे नहीं पता"**

अपनी परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने के बाद, नास्तिक के सर पर लोहे का एक हथौड़ा मारा जाएगा, इतनी ताकत से कि एक पहाड़ भी चूर चूर हो जाए। उसकी चीत्कार स्वर्ग तक सुनाई देगी: **"उसने झूठ बोला, उसके लिये नरक में कालीन बिछा दिया जाए, और नरक में उसके लिये द्वार खोल दिया जाए।"**[2] कब्र के फ़र्श पर नरक की कुछ तेज़ आग जला दी जाती है, और उसकी कब्र को इतना छोटा कर दिया जाता है कि उसके शरीर के कुचले जाने से उसकी पसलियाँ एक दूसरे में ऐंठ जाती हैं।[3] उसके बाद, एक अत्यंत बदसूरत, गंदे कपड़े पहने हुए और बहुत घिनौनी और अप्रिय बदबू छोड़ने वाली हस्ती उस नास्तिक आत्मा के पास आती है और कहती है: **"जो तुम्हें नापसंद है उसका शोक मनाओ, क्योंकि इसी दिन का तुमसे वायदा किया गया था।"** नास्तिक पूछेगा**: "तुम कौन हो, जिसका चेहरा इतना बदसूरत है और जो इतनी दुष्ट है?"** बदसूरत हस्ती उत्तर देगी: **"मैं तुम्हारे दुष्ट काम हूँ!"** नास्तिक को तब आत्मग्लानि का अनुभव कराया जाता है, उसे स्वर्ग का वह घर दिखाकर जहां वह रहता -अगर उसने सच्चा जीवन बिताया होता- और फिर हर सुबह शाम उसे एक द्वार से नरक में होने वाला उसका असली घर दिखाया जाता है।[4] अल्लाह अपनी पुस्तक में कहते हैं कि फिरौन के लोग कितने दुष्ट हैं, जो इस समय अपनी कब्रों में नरक का दृश्य देखने की यातना सह रहे हैं:

"अग्नि: 'उन्हें इसका सामना करना पड़ता है, सुबह और दोपहर, और उस दिन जब वह घड़ी आएगी (तब देवदूतों से कहा जाएगा): '(अब) फिरौन के लोगों को सबसे अधिक यातना दो" (क़ुरआन 40:46)

भय और घृणा, चिंता और निराशा से परेशान, नास्तिक अपनी कब्र में पूछता रहेगा: **"मेरे ईश्वर, अंतिम घड़ी न लाएँ, अंतिम घड़ी न लाएँ।"**

पैगंबर के साथी ज़ैद बी. थाबित ने बताया, जब मुहम्मद और उनके साथी कई ईश्वरों को मानने वालों की कब्रों के पास से गुजर रहे थे, तब पैगंबर का घोड़ा बिदक गया और वह गिरते गिरते बचे। पैगंबर (ईश्वर की दया और कृपा उन पर बनी रहे) ने कहा:

"इन लोगों को कब्र में यातना दी जा रही है, और यदि तुम अपने मरे हुओं को कब्र में दफनाना न छोड़ दो, तो मैं ईश्वर से विनती करूंगा कि वह तुम्हें कब्र के इस दंड को सुनने दें जो मैं (और यह घोडा) सुन पा रहा हूँ।" (सहीह मुस्लिम)

फ़ुटनोट:

[1] अल-हकीम, अबु दावूद और अन्य

[2] मुसनद अहमद

[3] मुसनद अहमद

[4] इब्न हिब्बन

इस लेख का वेब पता:

https://www.islamreligion.com/index.php/hi/articles/412

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।